ISSN 0973-2616

प्रगति, विकास और आशा

सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह बुलेटिन

वर्ष 10 अंक 10 www.csir.res.in अक्टूबर 2022

प्रधानमंत्री ने 15 अक्टूबर को वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद समिति की बैठक की अध्यक्षता की

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, जो वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के अध्यक्ष भी हैं, ने वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद समिति (सीएसआईआर सोसायटी) की बैठक की अध्यक्षता की।

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह, जो सीएसआईआर के उपाध्यक्ष हैं तथा केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल, सीएसआईआर सोसायटी के अन्य सदस्यों के साथ इस बैठक में उपस्थित

थे, जिसमें सरकार के अन्य मंत्रालयों के सचिव, उद्योगपति और प्रख्यात वैज्ञानिक भी शामिल हैं।

प्रधानमंत्री ने पिछले 80 वर्षों में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद के प्रयासों की सराहना की और वर्ष 2042 के लिए विजन विकसित करने का आग्रह किया जब सीएसआईआर 100 वर्ष का हो जाएगा। उन्होंने पिछले 80 वर्षों की यात्रा के अभिलेखीकरण के महत्व पर भी प्रकाश डाला, जो अब तक हुई प्रगति की समीक्षा करने में सहायक बन सकता है और उन कमियों के क्षेत्रों की पहचान कर सकता है जिन्हें ठीक किया जा सकता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रौद्योगिकी को जन सामान्य तक पहुंचाने के लिए वैज्ञानिक, वाणिज्यिक और सामाजिक घटकों का एक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए। उन्होंने वैज्ञानिक समुदाय के प्रमुखों से इस तरह के केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से वैज्ञानिक अनुसंधान तथा विकास को बढ़ावा देने में मदद करने के लिए , d 0;fä , d ç;kx'kkyk दृष्टिकोण अपनाने के लिए कहा। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि सभी प्रयोगशालाओं का एक आभासी शिखर सम्मेलन नियमित रूप से आयोजित किया जा सकता है जिसमें वे एक दूसरे के अनुभव से नई चीजें सीख सकते हैं।

प्रधानमंत्री ने वैज्ञानिक समुदाय से अनाज और बाजरे की नई किस्मों में प्रोटीन की मात्रा बढ़ाने के लिए तकनीकी समाधान लाने का आह्वान किया ताकि उपज और उसकी पोषण सामग्री में सुधार हो सके। उन्होंने वैज्ञानिकों से स्वदेशी खाद्य उत्पादों के उच्च पोषण मूल्यों की एक ऐसी सूची विकसित करने को कहा, जो उनकी वैश्विक स्वीकार्यता को बढ़ाने में मदद करेगा। उन्होंने उद्योग और अकादमिक एवं अनुसंधान संगठनों का भी आह्वान किया कि वे अधिक एकीकृत होकर निर्बाध रूप से काम करें तथा भारत की ऊर्जा सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करने के साथ ही चक्रीय (सर्कुलर) अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दें और सतत विकास की दिशा में आर्थिक रूप से व्यवहार्य समाधान विकसित करें।

- प्रधानमंत्री ने सीएसआईआर से वर्ष 2042 के लिए विजन विकसित करने का आग्रह किया जब यह 100 वर्ष का हो जाएगा।
- प्रधानमंत्री ने न केवल भारत के लिए बल्कि विश्व के लिए भी प्रौद्योगिकियों को विकसित करने और उच्च मानक एवं गुणवत्ता बनाए रखने का आग्रह किया
- प्रधानमंत्री ने उद्योग, शैक्षणिक और अनुसंधान संगठनों से आह्वान किया कि वे अधिक एकीकरण के साथ निर्बाध रूप से काम करें तथा भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करने के साथ ही चक्रीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा दें
- प्रधानमंत्री ने वैज्ञानिक समुदाय के प्रमुखों से एक व्यक्ति एक प्रयोगशाला दृष्टिकोण अपनाने को कहा
- इस बात पर जोर दिया गया है कि प्रौद्योगिकी को सामान्य मानव तक पहुंचाने के लिए वैज्ञानिक, तकनीकी, वाणिज्यिक और सामाजिक घटकों का एक एकीकृत दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है

प्रधानमंत्री ने न केवल भारत के लिए बल्कि विश्व के लिए नई प्रौद्योगिकियों का विकास करने और हरित ऊर्जा पर ध्यान केंद्रित करते हुए ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने के लिए नए दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने पारंपरिक ज्ञान से लेकर छात्रों की रुचि, कौशल सेट और दक्षताओं के मानचित्रण तक विभिन्न क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, जो भविष्य के भारत और दुनिया की मांगों को पूरा करने के लिए उन्हें बेहतर ढंग से तब अनुकूल बनाएगा क्योंकि जब हम भारत को वैश्विक नेता बनाने के उद्देश्य से विजन 2047 की ओर आगे बढ़ेंगे।

इससे पहले, बैठक में अपने शुरूआती संबोधन में, डॉ. जितेंद्र सिंह ने इस बात पर प्रकाश डाला कि इस वर्ष जब भारत ने आजादी के 75 साल पूरे किए हैं तभी वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद ने अपने 80 वर्ष भी पूरे कर लिए हैं और दोनों ने एक साथ यात्रा की है। उन्होंने उद्योग, शिक्षा और अनुसंधान के

एकीकरण, समन्वयन और वहां व्याप्त जड़ता को समाप्त करने पर जोर दिया।

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी ने सीएसआईआर की वर्तमान उपलब्धियों और योगदान पर एक प्रस्तुति दी तथा भारत की पहली हाइड्रोजन ईंधन सेल बस, जम्मू–कश्मीर में बैंगनी क्रांति की शुरुआत करने और भारत के समृद्ध पारम्परिक ज्ञान पर आधारित नवाचार को बढ़ावा देने के लिए पारम्परिक ज्ञान डिजिटल पुस्तकालय (टीकेडीएल लाइब्रेरी) खोलने जैसे हाल के प्रयासों पर प्रकाश डाला।

एमआरएनए प्लेटफॉर्म प्रौद्योगिकी के माध्यम से भविष्य में सम्भावित महामारियों के लिए तैयारी, युवा वैज्ञानिक नेतृत्व का संवर्धन एवं पोषण और स्थायी स्टार्ट–अप्स एवं जिज्ञासु आभासी प्रयोगशाला के माध्यम से स्कूली छात्रों तक पहुंचना, कुछ ऐसी अन्य प्रमुख पहलें थीं जिन्हें सीएसआईआर की महानिदेशक द्वारा उजागर किया गया था।

उन्होंने सीएसआईआर विजन 2030 की कार्य योजना भी प्रस्तुत की, जो राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं और विजन@2047 के साथ संरेखित है।

केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने सरकारी नौकरी की मानसिकता को स्टार्ट-अप संस्कृति के लिए बाधा बताया

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और पीएमओ, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्यमंत्री, डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि सरकारी नौकरी की मानसिकता स्टार्टअप संस्कृति के लिए बाधा उत्पन्न कर रही है, विशेष रूप से उत्तर भारत के लिए।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को भविष्य का विजन स्टार्टअप के लिए पूरा श्रेय दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 2015 में लाल किले की प्राचीर से अपने संबोधन में 'स्टार्टअप इंडिया स्टैंड अप इंडिया' का आह्वान किया था, जिसने लोगों में जागरुकता उत्पन्न हुई, जिसके परिणामस्वरूप भारत में स्टार्टअप की संख्या 2022 में 100 से ज्यादा यूनिकॉर्न के साथ 77,000 से ज्यादा हो गई है जो 2014 में केवल 350 थी और प्रधानमंत्री

मोदी के नेतृत्व में भारत ने स्टार्टअप की दुनिया में तीसरी रैंकिंग भी प्राप्त की है।

जम्मू में कृषि, अरोमा, डेयरी, फार्मा, आईटी, कंप्यूटर और संचार क्षेत्रों को कवर करते हुए अपनी तरह के पहले स्टार्टअप एक्सपो का उद्घाटन करते हुए, डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि स्टार्टअप संस्कृति अभी तक दक्षिण भारतीय राज्यों की तुलना में उत्तर भारतीय राज्यों के युवाओं और उद्यमियों की कल्पना से संबद्ध नहीं हो सकी है, जिसने वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त स्टार्टअप की एक श्रृंखला बनाते हुए शानदार बढ़त हासिल की है।

उन्होंने कहा कि कई युवा उद्यमियों के कुछ अनुकरणीय कार्यों पर ध्यान केंद्रित करना बहुत ही महत्वपूर्ण है, जिन्होंने अपने स्टार्टअप को शुरू करने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों की आकर्षक नौकरियों को छोड़ा है, क्योंकि उन युवा उद्यमियों को भविष्य में इस क्षेत्र में ज्यादा संभावना नजर आ रही है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि जम्मू कश्मीर में स्टार्टअप अभियान अपेक्षाकृत धीमा रहा है, भले ही भारत में 'पर्पल रिवोल्यूशन' का जन्म जम्मू कश्मीर में ही हुआ था और जम्मू कश्मीर भव्य अरोमा अभियान का जन्मस्थल भी रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि डेयरी और फार्मा के क्षेत्रों के अलावा विभिन्न कृषि आधारित स्टार्टअप के सफलता की कहानियों के माध्यम से इसके सकारात्मक प्रभावों को महसूस किया जाएगा।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने बेंगलुरु और चेन्नई जैसे शहरों को भारत में स्टार्टअप का बूम लाने वाली जगहों के रुप में रेखांकित किया और कहा कि 5जी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ड्रोन, सेमीकंडक्टर, ब्लॉक, हरित ऊर्जा और अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करके इनोवेटर्स, इन्क्यूबेटर्स और उद्यमी अपनी वैश्विक पहचान बना रहे हैं।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि उनके नेतृत्व में विभिन्न मंत्रालय और विभाग स्टार्टअप उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने के लिए वित्तीय सहायता के साथ–साथ तकनीकी सहायता और सुविधाएं दोनों उपलब्ध कराते हुए आकर्षक योगदान दे रहे हैं, जिसमें आजीविका का एक आकर्षक अवसर भी मौजूद है। लेकिन दुर्भाग्यवश, विशेष रूप से इस क्षेत्र के लोग और कई संभावित लाभार्थी इसका लाभ नहीं उठा पा रहे हैं क्योंकि उनमें जागरूकता की कमी है, हालांकि सभी जानकारी वेबसाइटों और पोर्टलों पर उपलब्ध है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने इस बात पर अफसोस व्यक्त किया कि भले ही स्टार्टअप मोदी सरकार की उच्च प्राथमिकताओं में से एक है लेकिन कुछ क्षेत्र के लोग इसका फायदा नहीं उठा पा रहे हैं। उन्होंने मीडियाकर्मियों से आग्रह किया कि वे युवाओं को इस ओर लाने की कोशिश करें और युवाओं का मार्गदर्शन करने के लिए सप्ताह में कम से कम एक बार स्टार्टअप की सफलता की कहानियां प्रस्तुत करें।

कृषि प्रौद्योगिकी स्टार्टअप को बड़े पैमाने पर बढ़ावा देने का आह्वान करते हुए डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का बहुत ही महत्वपूर्ण स्तंभ रहा है क्योंकि भारत की 54 प्रतिशत आबादी पूर्ण रुप से इस पर निर्भर है और यह सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 20 प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर द्वारा जम्मू कश्मीर में 'अरोमा मिशन ऑफ लैवेंडर' नामक अभियान के माध्यम से खेती को बढ़ावा देने वाली सफलता की कहानी को अन्य राज्यों में भी लागू किए जाने की आवश्यकता है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में देश में कृषि–तकनीकी स्टार्टअप की एक नई लहर उभरकर सामने आई है और ये स्टार्टअप आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन,

शीतलन और प्रशीतन, बीज प्रबंधन और वितरण से संबंधित समस्याओं का समाधान कर रहे हैं, इसके अलावा किसानों को बाजारों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुंचने में मदद भी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि युवा उद्यमी अब आईटी क्षेत्र और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की नौकरियां छोड़ रहे हैं और अपना स्टॅाटअप स्थापित कर रहे हैं क्योंकि इन युवा उद्यमियों को अब यह समझ आने लगा है कि उनके लिए स्टॅाटअप लाभदायक है और कृषि जैसे क्षेत्रों में निवेश करना बहुत ही कम जोखिम वाला और लाभदायक व्यवसाय है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि फसल मूल्यांकन को बढ़ावा देने, भूमि रिकॉर्ड को डिजिटलीकृत करने, कीटनाशकों और पोषक तत्वों के छिड़काव को बढ़ावा देने के लिए 'किसान ड्रोन' को बड़े पैमाने पर अपनाया जा सकता है और उन्होंने यह भी कहा कि प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए इजरायल, चीन और अमेरिका जैसे देशों ने अपने यहां कृषि प्रथाओं को रूपांतरित कर दिया है।

इस एक्सपो में शामिल होने वाले कुछ प्रमुख स्टार्टअप हैं–अनमोल शक्ति फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, फेरमेंटेक लैब्स प्रां लिमिटेड, मरीन गेट इनक्यूबेशन सेंटर (मैजिक), वृंदा एग्रीफार्म टेक्नोलॉजीज, वैनिक्स टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड, अरोमा, भद्रवाह, अर्बन एयर लैब्स, पहाड़ी अमृत, आहूजा इंजीनियरिंग सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, जेनेटिको रिसर्च एंड डायग्नोस्टिक्स, स्कैनपॉइंट जियोमैटिक्स लिमिटेड, पैराडॉक्स सोनिक स्पेस रिसर्च एसोसिएशन (पीएसएसआर इंडिया), पैराडॉक्स सोनिक स्पेस रिसर्च एसोसिएशन (पीएसएसआर इंडिया), सेंगाथली बायोफाइबर प्राइवेट लिमिटेड, अर्थटेक रिन्यूएबल्स एलएलपी, किडौरा इनोवेशन प्राइवेट लिमिटेड, वर्डेंट इम्पैक्ट प्राइवेट लिमिटेड (पहले इसका नाम स्टार्सकिल कंसल्टेंसी प्राइवेट लिमिटेड था), साइंटेक टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड, हिमालयन एसेंशियल ऑयल प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, एसआरएनएएस ओपीसी प्राइवेट लिमिटेड, जेके अरोमा लिमिटेड, गियर टेक्नोलॉजीज, यूब्रीथ, एस्पल कैन प्राइवेट लिमिटेड, सूरज श्रीकेमिकल्स, साहिल एपियरीज एंड बीहाइव प्रोडक्ट्स, कश्मीर ट्राउट, युक्तिका बायोटेक, रुद्र शक्ति जड़ी बूटी प्राइवेट लिमिटेड आदि।

इमटैक ने मनाया सीएसआईआर स्थापना दिवस

डॉ संजीव खोसला, निदेशक, सीएसआईआर-इमटैक प्रो. दुलाल पांडा, निदेशक, एमआईपीईआर को सम्मानित करते हुए

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) का 81वां स्थापना दिवस सीएसआईआर–सूक्ष्मजीव प्रौद्योगिकी संस्थान (इमटैक) में मनाया गया, जिसमें प्रतिष्ठित स्थापना दिवस व्याख्यान प्रो. दुलाल पांडा, निदेशक, राष्ट्रीय

फार्मास्युटिकल शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (एनआईपीईआर) मोहाली द्वारा दिया गया। इस वर्ष का स्थापना दिवस व्याख्यान प्रो. पांडा द्वारा दिया गया जो 'ट्यूबुलिन अनुसंधान के 55 वर्षों से सबक और मानव स्वास्थ्य और रोग में इसके प्रभाव'' पर केंद्रित था।

सीएसआईआर स्थापना दिवस के दौरान संस्थान में विद्यार्थियों का दौरा

प्रो. पांडा ने अपने भाषण में ट्यूबुलिन पर शोध पर कुछ महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए, जिसने कई महत्वपूर्ण सेलुलर प्रक्रियाओं जैसे कि समसूत्रण, कोशिका विभाजन, कोशिका गतिशीलता, विभेदन, और न्यूरोनल वृद्धि और विकास को समझने की नींव रखी है। अपने संबोधन में, उन्होंने रेखांकित किया कि कैंसर चिकित्सा विज्ञान को प्रभावी एंटी–ट्यूमर किया और एंटी–ट्यूबुलिन दवाओं की सीमित विषाक्तता से बहुत लाभ हुआ है।

डॉ. संजीव खोसला, निदेशक, इमटैक ने सीएसआईआर के स्थापना दिवस पर मेहमानों और संकाय का स्वागत करते हुए दर्शकों को पिछले आठ दशकों में सीएसआईआर की राष्ट्र के लिए सेवा और सीएसआईआर के वैज्ञानिक और तकनीकी हस्तक्षेप से समाज को कैसे मदद की है, से अवगत कराया। अपने स्वागत भाषण में, उन्होंने युवा वैज्ञानिकों और छात्रों को विज्ञान में वैश्विक मानक स्थापित करने का आह्वान किया और जोर देकर कहा कि आने वाले 25 वर्ष भारतीय विज्ञान पारिस्थितिकी तंत्र के विकास के लिए 'अमृत काल' (सही समय) होंगे।

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), जो विविध विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अपने अत्याधुनिक अनुसंधान एवं विकास ज्ञान आधार के लिए जाना जाता है, एक समकालीन अनुसंधान एवं विकास संगठन है और इसकी स्थापना 1942 में हुई थी।

वर्तमान में, सीएसआईआर के पास 37 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं, 39 आउटरीच केंद्रों का एक गतिशील नेटवर्क 3 इनोवेशन कॉम्प्लेक्स और 5 इकाइयाँ, सीएसआईआर की अनुसंधान एवं विकास विशेषज्ञता और अनुभव लगभग 4350 वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मियों द्वारा समर्थित लगभग 3460 सक्रिय वैज्ञानिकों में निहित है।

समारोह के हिस्से के रूप में, सीएसआईआर–इमटैक ने 'ओपन डे' भी मनाया, जिसके दौरान ट्राइसिटी और उसके आसपास के लगभग 350 स्कूली छात्रों, स्नातकों और आम जनता ने संस्थान का दौरा किया और सूक्ष्म जीव विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की। संस्थान ने विभिन्न शैक्षणिक और पाठ्येतर गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए अपने कर्मचारियों के मेधावी बच्चों को भी सम्मानित किया और पिछले दो वर्षों में सेवानिवृत्त हुए अपने कर्मचारियों को स्मृति चिन्ह भी दिए।

सीएसआईआर-इमटैक माइक्रोबियल विज्ञान में उत्कृष्टता के लिए एक राष्ट्रीय केंद्र है और 1984 में सीएसआईआर के तत्वाधान में स्थापित किया गया था। इमटैक का विजन और मिशन मौलिक खोजों से मजबूत ट्रांसलेशनल इकोसिस्टम बनाना और अत्याधुनिक प्रक्रियाओं और प्लेटफॉर्म के साथ अधूरी स्वास्थ्य देखभाल और औद्योगिक जरूरतों को पूरा करना है।

सीएसआईआर का हिस्सा बनना गर्व की बात : डॉ. रंगराजन

सीएसआईआर-केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान का 81वां सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह मनाया गया। निदेशक, सीएसआईआर-सीडीआरआई डॉ राधा रंगराजन ने कहा कि हमें सीएसआईआर का हिस्सा होने पर गर्व महसूस हो रहा है।

वर्ष 1942 में स्थापित इस संगठन ने भारतीय विज्ञान और उद्योग के विकास और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

डॉ जीपी तलवार, निदेशक, अनुसंधान, तलवार रिसर्च फाउंडेशन, नई दिल्ली, मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। डॉ तलवार ने उच्च उपयोगिता के उत्पाद विकसित करने के लिए मिशन उन्मुख अनुसंधान पर एक बहुत ही जानकारीपूर्ण व्याख्यान दिया। अपने सम्बोधन में उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि उच्च उपयोगिता वाले उत्पादों को विकसित करने के लिए हमें एक मिशन उन्मुख अनुसंधान दृष्टिकोण की आवश्यकता है। मल्ट्री बेसिलरी लेप्रोसी के लिए विकसित इम्यूनो थेराप्यूटिक बैक्सीन के उदाहरण का उपयोग करते हुए, उन्होंने बताया कि कैसे यह एमआईपी तेजी से बैक्टीरियल क्लीयरेंस और रिकवरी टाइम को कम करके अपने उद्देश्य की पूर्ति कर रहा है।

कुष्ठ रोग अभी भी महत्वपूर्ण सामाजिक स्वास्थ्य चुनौतियों का प्रतिनिधित्व करता है। एमआईपी, लेप्रोसी के कारण बने भद्दे एवं बदसूरत दागों एवं निशानों को भी शीघ्र ही सामान्य त्वचा में परिवर्तित कर सकता है और एमआईपी टीकाकरण वाले रोगियों में लेप्रोसी का रिलैप्स रेट भी बहुत कम पाया गया है। सीएसआईआर-सीडीआरआई में सीएसआईआर स्थापना दिवस 2022 समारोह के अवसर पर डॉ. अतुल गोयल, डॉ दिव्या सिंह और उनकी टीम ने नोबेल ओरली एक्टिव फ्रैक्चर हीलिंग ड्रग कैंडिडेट -007-500 लीड आइडेंटिफिकेशन से लेकर फेज-1 क्लिनिकल ट्रायल तक नामक प्रौद्योगिकी की खोज और विकास के लिए वर्ष 2022 के लिए प्रतिष्ठित डॉ मृदुला कम्बोज पुरस्कार प्राप्त किया।

चीफ साइंटिस्ट्र और प्रोजेक्ट लीडर डॉ अतुल गोयल ने बताया कि दुनियाभर में बाजार में एफडीए द्वारा अनुमोदित कोई दवा उपलब्ध नहीं है। ऐसे–007–500 के साथ हमारे पूर्व नैदानिक अध्ययनों ने अस्थि की अच्छी ताकत के साथ फ्रैक्चर साइट पर 40–50 प्रतिशत अधिक शीघ्रता के साथ अस्थि का पुनर्जनन दिखाया है।

सीडीआरआई को सीडीएससीओ से

चरण नैदानिक परीक्षण अनुमोदन प्राप्त हुआ है और एस-007-500 की तकनीक को संस्थान द्वारा ट्रोइका फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड अहमदाबाद को अगले वर्ष की शुरुआत में केजीएमयू लखनऊ में चरण नैदानिक परीक्षण आयोजित करने के लिए सफलतापूर्वक स्थानांतरित कर दिया गया है। सीडीआरआई के सहकर्मी जो पिछले वर्ष सेवानिवृत्त हो चुके हैं और जिन्होंने सीएसआईआर में 25 वर्ष की सेवा पूरी कर ली है उन्हें सम्मानित किया गया। इसके अलावा सीडीआरआई सहयोगियों के मेधावी बच्चों को, जिन्होंने हाई स्कूल और इंटरमीडिएट में विज्ञान विषय में 90 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किये हैं, को उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र भी मिला। अकादमिक उत्कृष्टता के लिए मधुस्साही पांडा और अनंत गौनियाल को विज्ञान विषय में 100 प्रतिशत अंक एवं कुल 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने के लिए 5000 रूपये का नकद पुरस्कार तथा इशानी शर्मा और प्रांजल द्विवेदी को 12वीं कक्षा में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने पर 3000 रूपये नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

सीएसआईआर-सीडीआरआई कर्मचारी एवं हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया। वहीं हिंदी पखवाड़ा समारोह का भी समापन हुआ।

सीएसआईआर-आईआईपी ने 81 वाँ सीएसआईआर स्थापना दिवस मनाया

देहरादून में स्थित सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, सीएसआईआर के प्रमुख संस्थानों में से एक है। सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान ने 81 वां सीएसआईआर स्थापना दिवस मनाया। यह समारोह मूल संगठन के गौरवशाली अतीत और रोमांचक भविष्य के जश्न मनाने के साथ उसे राष्ट्र हित में फिर से समर्पित करने के लिए आयोजित किया गया था।

डॉ. टी. रामासामी, प्रौद्योगिकी विज्ञान विभाग में भारत सरकार के पूर्व सचिव ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की और स्थापना दिवस व्याख्यान दिया।

वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ जी डी ठाकरे ने सभी का स्वागत करते हुए और वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद की जानकारी देकर कार्यक्रम शुरुआत की। इसके अलावा, श्री सुदीप गांगुली, मुख्य वैज्ञानिक ने दर्शकों को सीएसआईआर की यात्रा के बारे में बताया।

उन्होंने याद कराया कि सीएसआईआर की स्थापना 1942 में पंडित जवाहर लाल नेहरू जैसे दूरदर्शी नेताओं ने की थी। सीएसआईआर–भापेसं के निदेशक डॉ. अंजन रे ने सम्मानित सभा को सूचित किया कि सीएसआईआर विविध क्षेत्रों में कार्य कर रहा है। सीएसआईआर स्थापना दिवस सभी 37 अनुसंधान प्रयोगशालाओं में मनाया जाता है। डॉ रे ने मुख्य अतिथि डॉ टी रामासामी का परिचय दिया और दर्शकों को उनकी उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी।

डॉ रामासामी ने उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति को भारत के ऊर्जा भविष्य को सीएसआईआर के लिए एक पथ पर सूचनात्मक और ज्ञानवर्धक स्थापना दिवस व्याख्यान के द्वारा प्रबुद्ध किया। उन्होंने ऊर्जा आवश्यकताओं ऊर्जा सुरक्षा और ऊर्जा के वैकल्पिक स्त्रोतों के विभिन्न पहलुओं को छुआ। उन्होंने ऊर्जा सुरक्षा और स्थिरता के माध्यम से भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में तब्दील करने के लिए सीएसआईआर की भूमिका को सुनिश्चित किया। इस अवसर पर सितंबर 2020 से अगस्त 2022 के

बीच सेवानिवृत्त हो चुके कर्मचारियों को सम्मान पत्र और स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया।

संगठन के लिए 25 वर्ष की सेवा पूरी करने वाले कर्मचारियों को भी उनकी सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। इसके अलावा, सीएसआईआर–भापेसं कर्मचारियों के मेधावी बच्चों को नकद पुरस्कार/छात्रवृत्ति और प्रशंसा प्रमाण

पत्र प्रदान किए गए इस खास मौके पर सांस्कृतिक संध्या का भी आयोजन किया गया।

इस आयोजन में कर्मचारियों, सीएसआईआर-भापेसं कर्मचारियों के बच्चों और पीएचडी विद्वानों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों और संविधान दिवस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया। प्रशासनिक अधिकारी पूर्णिमा अरोड़ा ने अंत में धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया और कार्यक्रम की भव्य सफलता में योगदान देने वाले सभी लोगों को धन्यवाद दिया।

सीएसआईआर-एनबीआरआई में 81 वां स्थापना दिवस मनाया गया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान द्वारा मंगलवार को अपनी पैतृक संस्था वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (नई दिल्ली) का 81वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम से ऑनलाइन जुड़े।

संस्थान के निदेशक प्रो. एसके बारिक द्वारा संस्थान में 25 वर्ष की सेवा पूरी करने वाले नौ कर्मचारियों एवं विगत दो वर्षों में सेवानिवृत होने वाले 31 कर्मचारियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया। इसके साथ-साथ सीएसआईआर-एनबीआरआई कर्मचारियों के मेधावी छात्रों को भी पुरस्कृत किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. हिमांशु पाठक ने सीएसआईआर द्वारा समाज के हित में किये गए कार्यों एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों पर सभी को बधाई देते हुए कहा कि आज का दिन हमें यह याद करने का अवसर प्रदान करता है कि हमने क्या किया है और क्या किया जाना शेष है।

जो देश कभी अपनी आवश्यकताओं के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहता था, आज स्वयं आत्मनिर्भर बनकर दूसरे देशों की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कर रहा है। यह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की ही देन है। इस मौके पर संस्थान द्वारा हल्दी में पाए जाने वाले महत्वपूर्ण यौगिक कर्कुमिन को खाने योग्य कैप्सूल (क्रोमा–3) बनाने की तकनीकी को मेसर्स टेक्नो केमिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड (कालीकट) को स्थानांतरित किया गया।

इस तकनीकी को प्रधान वैज्ञानिक डॉ. बी एन सिंह और उनकी टीम ने विकसित किया था। डॉ. बीएन सिंह ने बताया कि हल्दी अपने औषधीय गुणों के कारण प्राचीन औषधीय तंत्र आयुर्वेद में एक विशेष महत्व रखती है, हालांकि इसमें पाए जाने वाले औषधीय यौगिक कर्कुमिन की खराब जैव उपलब्धता और पानी में घुलनशीलता की कमी के कारण, इसके औषधीय गुणों का पूरा फायदा हम नहीं ले पाते हैं। स्थापना दिवस कार्यक्रम का समन्वयन मुख्य वैज्ञानिक डॉ. प्रमोद शिर्के द्वारा किया गया।

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद सीएसआईआर-आईएमएमटी ने मनाया स्थापना दिवस

सीएसआईआर-आईएमएमटी भुवनेश्वर ने 27 सितंबर 2022 को संस्थान के परिसर में सीएसआईआर, नई दिल्ली के मूल निकाय का 81वां स्थापना दिवस मनाया।

आईएमएमटी में स्थापना दिवस कार्यक्रम का आयोजन आईएमएमटी के निदेशक प्रो सुधासत्व बसु के स्वागत भाषण से हुआ।

सभा को संबोधित करते हुए आईएमएमटी के निदेशक प्रो सुधासत्व बसु ने कहा कि, सीएसआईआर ने कोविड–19 के दौरान आधुनिक भारत और भारतीय समाज को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें विनिर्माण से लेकर वायरस के लिए जीनोमिक अध्ययन और ऊर्जा स्रोतों पर अनुसंधान आदि के लिए कई विकास कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

हम गहरे महासागर से प्राप्त होने वाली विभिन्न प्रकार की सामग्रियों पर भी शोध कर रहे हैं।

इस अवसर पर बोलते हुए माननीय मुख्य अतिथि, सुधाकर पंडा, निदेशक, एनआईएसईआर-भुवनेश्वर ने कहा कि हमें नई पीढ़ी को शिक्षा में लचीलेपन की अनुमति देनी चाहिए और अपनी जिम्मेदारियों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। हमें नई शिक्षा नीति का लाभ उठाना चाहिए।

इस अवसर पर अतिथियों एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में हिन्दी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का विमोचन किया गया।

सम्मानित अतिथि, प्रोफेसर रामकृष्ण आर सोंडे, केमिकल इंजीनियरिंग विभाग, आईआईटी-दिल्ली ने 'उच्च राख कोयला गैसीकरण पर अवसरों और चुनौतियों के अगले दशक पर स्थापना दिवस व्याख्यान दिया। इस अवसर के अतिथियों ने सीएसआईआर-आईएमएमटी में विभिन्न सुविधाओं का दौरा किया और प्रमुख प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शनों को देखा।

आईएमएमटी ने केले के अपशिष्ट बायोमास से पोटाश समृद्ध बायोचार की प्रौद्योगिकी के लिए जयदेव केला किसान और कारीगर एसोसिएशन के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं और इसे बाजार में उपलब्ध कराया है।

इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. अशोक कुमार साहू, मुख्य वैज्ञानिक, अध्यक्ष, सीएसआईआर स्थापना दिवस आयोजन समिति ने किया, उन्होंने धन्यवाद प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया।

सीएसआईआर-भारतीय रासायनिक जीवविज्ञान संस्थान, कोलकाता ने हिन्दी सप्ताह मनाया

भारतीय रासायनिक जीवविज्ञान संस्थान में 5-9 सितंबर 2022 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। 5 सितंबर, 2022 को हिंदी सप्ताह उद्‌घाटन समारोह के अवसर पर सीएसआईआर के संयुक्त सचिव (प्रशासन) श्री महेंद्र कुमार गुप्ता जी उपस्थित थे। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की शुभारम्भ संस्थान के निदेशक, डॉ. अरूण बंद्योपाध्याय द्वारा किया गया।

संस्थान के निदेशक द्वारा स्वागत भाषण में सभी का अभिनंदन करते हुए सबका हार्दिक स्वागत किया गया। उन्होंने संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन पर हुई कार्य की सराहना करते हुए सभी कर्मचारियों को राजभाषा में कार्य करने का आह्वान किया। संस्थान के हिन्दी वार्षिक प्रतिवेदन 2020–24 का विमोचन संयुक्त सचिव (प्रशासन) श्री महेंद्र कुमार गुप्ता जी द्वारा किया गया।

हिंदी सप्ताह के उद्‌घाटन समारोह के अवसर पर डॉ. सुचेता त्रिपाठी, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक ने हिंदी में वैज्ञानिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। 5 सितंबर, 2022 को हिंदी कविता कंठस्थ प्रतियोगिता एवं हिंदी तत्काल भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रण श्री बी. के. कर जी के स्वागत भाषण द्वारा हुआ। हिंदी कविता कंठस्थ प्रतियोगिता एवं हिंदी तत्काल भाषण प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में डॉ. सुनंदा राय चौधरी, एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग (पूर्व), योगेश चंद्र चौधरी कॉलेज, कोलकाता एवं डॉ. पायल, विजिटिंग प्रोफेसर, लालबाबा कॉलेज, हावड़ा उपस्थित थी।

6 सितंबर, 2022 हिंदी निबंध एवं टिप्पण तथा मसौदा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के प्रतिभागियों ने काफी बडी संख्या में भाग लिया।

इस दिन हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसके निर्णायक श्री एल. के. सिंह, हिन्दी शिक्षक, हिंदी शिक्षण योजना, निजाम पैलेस, कोलकाता एवं श्री प्रियंकर पालीवाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, सीएसआईआर-केंद्रीय कांच और सिरामिक अनुसंधान संस्थान उपस्थित थे।

7 सितंबर, 2022 को साइबर सुरक्षा के जागरूकता विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया जिसका संचालन श्री प्रोसुन प्रोधान, वरिष्ठ सहायक, प्रशिक्षण एवं व्यवसाय विकास, पश्चिम बंगाल इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग विकास निगम लिमिटेड, कोलकाता द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के सभी कर्मचारीगण एवं अनुसंधनकर्ताओं ने उत्साहपर्वूक भाग लिया। साइबर क्राइम किस तरह होता है और इससे बचाव किस तरह किया जाए इसपर वक्ता ने अपना वक्तव्य रखा।

साइबर सुरक्षा पर उन्होंने विस्तृत जानकारी दी, जो कि बहुत अहम और महत्वपूर्ण थी। 9 सितंबर, 2022 को हिंदी सप्ताह समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अनुप कुमार, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, गृह मंत्रालय, कोलकाता का स्वागत हमारे संस्थान के वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक श्री बी. के. कर द्वारा किया गया। 5 से 9 सितंबर 2022 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में प्रथम,

द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को प्रतिभागिता पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

संस्थान के प्रेक्षागृह में उपस्थित कर्मचारियों एवं अनुसंधानकर्ताओं के अलावा उपस्थित लोगो के लिए अंत में हिंदी में 'ह' से एक शब्द लिखने बोला गया था एवं सही शब्द लिखने पर सभी को पुरस्कृत किया गया।

श्री अनुप कुमार के व्याख्यान से उपस्थित सभी लोग काफी प्रभावीत हुए अंत में संस्थान की हिंदी अधिकारी श्रीमती अम्बालिका नाग के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह संपन्न

सीएसआईआर-राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह संस्थान के एस.बी. हॉल में संपन्न हुआ। अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ.वी.एम. तिवारी ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद के कुलपति प्रो. ई. सुरेश कुमार उपस्थित थे। आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, प्रो. सुरेश कुमार ने अपने सरल एवं सुबोध हिन्दी में एकल भाषिकता और बहुभाषिकता की तुलना की। उन्होंने विदेशों का उदाहरण देते हुए कहा कि एक मात्र भाषा बोलने वाले लोगों में लैटरल थिंकिंग की क्षमता बहुत कम होती है। वहीं यदि भारत जैसे बहु भाषी देशें मे यह अधिक होती है। उन्होंने कहा कि किसी भी दूसरी भाषा सीखने के लिए पहले अपनी मातृभाषा पर पकड़ या सही रूप में प्रयोग करने की क्षमता होनी चहिए। मातृभाषा के ज्ञान के अभाव में किसी दूसरी भाषा को सीखना असंभव सी बात है। उन्होंने देश की दूसरी भाषाओं को सीखने के लिए सभी से आग्रह किया। डॉ. वी.एम. तिवारी ने स्मृति चिहन और शॉल के

साथ प्रो. सुरेश कुमार का सम्मान किया। इससे पूर्व केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का हिन्दी दिवस के अवसर पर दिया गया संदेश संस्थान के कनि. हिन्दी अनुवादक अजित कुमार ने पढ़कर सुनाया। डॉ. वी. एम. तिवारी ने हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी। उन्होंने कहा कि इन पुरस्कारों से राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी आपकी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। उन्होंने उम्मीद जतायी कि बाकी कर्मचारी भी राजभाषा संबंधी प्रगति कर आने वाले दिनों में पुरस्कार प्राप्त करेंगे। हाल ही में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए गए संस्थान के राजभाषा संबंधी निरीक्षण का उल्लेख करते हुए कहा कि सभी के योगदान के कारण यह अत्यंत सफल रहा है। उन्होंने उम्मीद की कि इसी स्फूर्ति को लेकर आगे भी राजभाषा कार्यान्वयन में सभी योगदान देते रहेंगे और संसदीय समिति की अपेक्षाओं को पूरा करेंगे।

उन्होंने कहा कि संस्थान की उपलब्धियों और कार्य क्षेत्र के बारे में आम जनता को बताने की आवश्यकता है। इसके लिए बहुत अच्छा माध्यम हिन्दी भाषा है। उन्होंने सभी वैज्ञानिक एवं तकनीकी समूह के कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वह अपने वैज्ञानिक अनुसंधान के बारे में हिन्दी में लिखें और उसका प्रचार-प्रसार करें।

अवसर पर हिन्दी पखवाड़ा आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र (वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक) ने अंग्रेजी की वैज्ञानिक विषय वस्तु का अनुवाद हिन्दी में करते समय आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों के बारे में उल्लेख करते हुए कहा कि अंग्रेजी शब्द का सह हिन्दी शब्द न मिलने पर अंग्रेजी शब्द को लिप्यांतरित न कर उसके लिए नया शब्द हिन्दी में बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। हिन्दी में विज्ञान लेखन के लिए ऐसी क्षमता होनी जरूरी है। उन्होंने संस्थान में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए आयोजित हिन्दी पखवाड़े (6 से 30 सितंबर) के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि संस्थान में हिन्दी वर्तनी, हिन्दी वक्तव्य, हिन्दी गीत गाना, हिन्दी कविता वाचन, हिन्दी टंकण, हिन्दी प्रशासन शब्दावली और हिन्दी निबंध लेखन तथा हिन्दी अंताक्षरी प्रतियेगिताएँ आयोजित की गयीं, जिनमें संस्थान के कर्मचारियों एवं उनके परिजनों ने हिस्सा लिया। उन्होंने विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि हिन्दी पखवाड़े के दौरान संस्थान में वैज्ञानिकों द्वारा हर वर्ष आयोजित किए जाने वाले आंतरिक हिन्दी व्याख्यानों के अंतर्गत इस वर्ष संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. पी.एस.आर प्रसाद द्वारा 'राजालाकार हाइड्रेट-संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ' शीर्षक हिन्दी में व्याख्यान दिया। उन्होंने आयोजन समिति की ओर से मुख्य अतिथि प्रो. ई. सुरेश कुमार, संस्थान के निदेशक डॉ.वी.एम. तिवारी तथा संस्थान के हिन्दी अनुभाग को धन्यवाद दिया। समारोह में पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार प्रदान किए. गए। कार्यक्रम का शुभारम्भ शोध छात्र 'शरबजीत दास द्वारा प्रस्तुत वंदना से हुआ। मुख्य अतिथि का परिचय संस्थान के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी चि.वें. सुब्बाराव ने दिया। संस्थान के प्रशासन नियंत्रक डी.वी.एस. शास्री के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम का समन्वयन एवं संचालन संस्थान के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी चि.वें. सुब्बाराव ने किया।

आयुष मंत्रालय और सीएसआईआर-निस्पर ने आयुर्वेद @2047 पर एक विशेष सत्र का आयोजन किया

नई दिल्ली स्थित केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान के अनुसंधान अधिकारी (आयुर्वेद) डॉ. अमित ने सीएसआईआर-निस्पर की ओर से आयुर्वेद@2047 पर आयोजित विशेष सत्र में अपना एक मुख्य व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा, सन्तुलित आहार, खूब पानी पीना, पर्याप्त नींद, शारीरिक काम और मानसिक

संतुलन स्वस्थ जीवन जीने के प्रमुख कारक हैं। आयुर्वेद शरीर, इंद्रियों, मस्तिष्क और आत्मा का विज्ञान है। यह ज्ञान का एक विषय है, जिसका सीधा संबंध मानव स्वास्थ्य और कल्याण से है।" उनके व्याख्यान की विषय वस्तु "वृद्ध-जनों और मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने के साथ स्वस्थ रहने के लिए आयुर्वेद के मूल सिद्धांत" पर थी।

यह कार्यक्रम आयुष मंत्रालय की ओर से वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर), नई दिल्ली के सहयोग से 11 अक्टूबर, 2022 को आयोजित किया गया।

इस अवसर पर सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रोफेसर रंजना अग्रवाल ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि भारतीय संस्कृति मानव स्वास्थ्य की समग्र अवधारणा में शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के सामंजस्य की बात

करती है और यह भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली की प्रमुख विशेषता है। इसके अलावा प्रोफेसर अग्रवाल ने सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित सामाजिक पारंपरिक ज्ञान (स्वास्तिक) कार्यक्रम के हालिया योगदान का भी उल्लेख किया। उन्होंने इस कार्यक्रम से प्राप्त सह-संबंध व अंतदृष्टि प्रदान कीं, जो हमारे देश के आयुर्वेद और पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को मूल्यवान बनाते हैं। सीएसआईआर-निस्पर की प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुमन रे ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। इस कार्यक्रम का संचालन श्री अनिरुद्ध तिवारी ने किया। इस विशेष सत्र के बाद भारत सरकार के आयुष मंत्रालय ने एक निःशुल्क चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया। इसमें मंत्रालय के आयुर्वेद विशेषज्ञों ने सीएसआईआर-निस्पर से जुड़े कर्मचारियों को चिकित्सा परामर्श प्रदान की।

सीएसआईआर-निस्पर में हिंदी माह 2022 का आयोजन

हिंदी दिवस (14 सितंबर) के उपलक्ष्य में सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 1 से 30 सितंबर 2022 की अवधि में "हिंदी माह" मनाया गया, जिसका उद्घाटन समारोह दिनांक 02.09.2022 को पूर्वाह्न 10:30 बजे आयोजित किया गया।

इस अवसर पर एक परस्पर परिचर्चा कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसका उद्देश्य संस्थान के कार्मिकों को हिन्दी में अपना वैज्ञानिक तथा प्रशासनिक कार्य

करने में आने वाली समस्याओं तथा उनके समाधानों पर चर्चा तथा चर्चा में सम्मिलित सभी प्रतिभागियों की इस विषय पर व्यक्तिगत राय लेना था। इस विषय पर सभी लोगों ने खुलकर चर्चा की तथा अपने मत व्यक्त किए।

हिन्दी को संस्थान में बढावा देने के लिए कार्मिकों ने भांति भांति के सुझाव दिये जिसमे कुछ प्रमुख हैं– हिन्दी को औपचारिकता के दायरे से बाहर लाना, स्वयं से आरंभ करना, हिन्दी के साथ साथ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव, सम्प्रेषण के महत्व को समझना, भाषा को रोजगार से जोड़ना, तिमाही कार्यशालाओं का नियमित आयोजन, मौलिक लेखन हिन्दी में करना आदि।

इस अवसर पर श्री राजेश कुमार सिंह रौशन, प्रशासन नियंत्रक महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि मातृभाषा से बढ़कर कुछ भी नहीं है और हमारी प्रारम्भिक भाषा के रूप में हिन्दी सर्वत्र उपस्थित है। भाषा की प्रकृति पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी एक वैज्ञानिक भाषा है इसमे हम जो बोलते हैं वही लिखते है। उन्होंने जोर दे कर कहा कि हिन्दी अनुप्रयोग संबंधी धारा 351 दंडात्मक नहीं है, यह तो हमारी सामसिक अभिव्यक्ति का प्रतीक है।

उन्होंने आगे कहा कि हमें भाषा के प्रति संवेदनशील होना चाहिए तथा हिन्दी में ही बात और संवाद करना चाहिए। यह हिन्दी को आगे बढ़ाने का एकमात्र असरदायक तथा प्रभावशाली उपाय है।

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के वरिष्ठ सदस्य श्री हसन जावेद खॉ, प्रभारी, राजभाषा तथा मुख्य वैज्ञानिक, पीएसडी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संस्थान ने अभी हाल ही में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के राजभाषा कीर्ति पुरस्कार का प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है जो सम्पूर्ण संस्थान के लिए गौरव की बात है।

इस उपलब्धि के लिए उन्होंने संस्थान के सभी कार्मिकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप सभी के सहयोग से यह संभव हो पाया है। साथ ही उन्होंने हिंदी माह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के साथ ही उन्होंने हिंदी माह को सफल बनाने के लिए सभी कार्मिकों से अपील की।

हिंदी माह के दौरान संस्थान के नियमित कार्मिकों तथा एसीएसआईआर के विद्यार्थियों और विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत परियोजना स्टाफ के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया गयाः कंप्यूटर पर हिंदी में टंकण प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान/अंग्रेजी–हिंदी शब्दावली प्रतियोगिता,हिंदी समाचार वाचन प्रतियोगिता ,कविता पाठ प्रतियोगिता, हिंदी में पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण, चित्रलेखन प्रतियोगिता आदि

दिनांक 28.09.2022 को पूर्वाह्न 11 बजे विवेकानंद कक्ष में 'हिंदी माह समारोह' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद के संयुक्त सचिव (प्रशा.) श्री महेन्द्र कुमार गुप्ता जी को आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर अध्यक्षीय संबोधन

में सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल जी ने संस्थान में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की प्रगति का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया। इस संबंध में उन्होंने विशेष उल्लेख किया कि सीएसआईआर-निस्पर (पूर्व पीआईडी) द्वारा पिछले 70 वर्षों से हिंदी में प्रकाशित की जा रही एक मात्र विज्ञान पत्रिका 'विज्ञान प्रगति' को 14 सितंबर 2022 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

श्री महेन्द्र कुमार गुप्ता, संयुक्त सचिव (प्रशा.) ने अपने अतिथी सम्बोधन में बताया कि हिन्दी में काम करना बहुत सरल है तथा हमें अपना सरकारी कार्य हिन्दी में करने से परहेज नहीं करना चाहिए।

इस अवसर पर उन्होंने संस्थान की राजभाषा छमाही पत्रिका नवसंचेतना के नवीनतम अंक का विमोचन भी किया। संस्थान के विभिन कार्मिकों को हिन्दी प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त करने के लिए पुरस्कृत किया गया। उपरोक्त सभी प्रतियोगिताओं में एक-एक प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार और दो–दो प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए।

इसके अतिरिक्त, पिछले एक वर्ष अर्थात दिनांक 01.09.2021 से 31.08.2022 की अवधि में सीएसआईआर-निस्पर में सरकारी कार्य (प्रशासन, वित्त

एवं लेखा और भंडार एवं क्रय संबंधी) मूल रूप से हिंदी में करने वाले (वर्ष में कम से कम 20 हजार शब्द या उससे अधिक शब्द हिंदी में लिखने हेतु) पात्र अधिकारियों/कर्मचारियों को नियमानुसार 'राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार' और वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी में कार्य (किसी प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पत्रिका में हिंदी में अपना पेपर या लेख प्रकाशित कराना, राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी में हिंदी में अपना पेपर या लेख प्रस्तुति करना और अन्य प्रकार के कार्य) करने वाले वैज्ञानिकों/तकनीकी स्टाफ को 'विशिष्ट प्रोत्साहन पुरस्कार' प्रदान किए गए।

श्री राजेश कुमार सिंह रौशन, प्रशासन नियंत्रक महोदय के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही समारोह सम्पन्न हुआ

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक
सीएसआईआर समाचार

NISCPR
सीएसआईआर-निस्पर

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री हसन जावेद खान द्वारा स्वामी राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली–110012 से प्रकाशित एवं मुद्रित

संपादकः अनिल कुमार श्रीवास्तव, सहायक संपादकः मीनाक्षी गौड़, अनुवादः अनिरुद्ध तिवारी,
प्रोडक्शनः अश्वनी कुमार ब्राह्मी,
फोनः 25841769, 25846304–7/371; फैक्सः 25847062; ईमेलः csirsamachar@niscpr.res.in; वेबसाइटः http://www.niscpr.res.in
बिक्री एवं वितरण अधिकारी, निस्पर; ईमेलः sales@niscpr.res.in; फोनः 011-25843359
वार्षिक सदस्यताः ₹ 500/– एक अंकः ₹ 50/–

DELHIN / 2013/52141